नरम-दिली का बयान

(किताबुल रिकाक बुखारी शरीफ) /3

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

एक हज़ार मुन्तखब हदीसे बुखारी शरीफ हिन्दी.

नोटः- 'हदीष की रिवायत का खुलासा है'.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

टॉपिक्स

***मुंह से अच्छी बात निकाले वरना खामोश रहे**

***गुनाहो से बाज रहना**

***अपने से कम की तरफ देखे और बडे की तरफ ना देखे**

***नेकी और बुराई का इरादा करना कैसा है?**

***दुनीया से अमानतदारी का उठ जाना**

***दिखावा और शोहरत की बुराई**

*मुंह से अच्छी बात निकाले वरना खामोश रहे

रावी हज़रत सहल बिन सअद रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जो मुझे अपने जबडो के दरमियान (यानी जबान) और अपनी टांगो के दरमियान (यानी शर्मगाह) की जमानत दे दे तो में उस्के लिये जन्नत

का जामिन (गेरनटर) हु.

वजाहत- अगर इन दोनो के शर (बुराई) से अपने आपको बचाले तो बेशुमार गुनाहो से बच सकते है. (फत्हुल बारी)

रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया आदमी कभी ऐसी बात मुंह से निकालता है जिस्मे अल्लाह तआला की रज़ामंदी होती है हालाकी वह उस्को कुछ अहमियत नहीं देता, तो उस्की वजह से अल्लाह तआला उस्के दर्ज़े बुलन्द कर देते है, और कभी बन्दा अल्लाह तआला की नाराजगी की कोई बात बिना सोचे-समझे मुंह से निकाल बैठता है लेकिन उस्की वजह से अल्लाह तआला उसे जहन्नम में डाल देते है.

वजाहत- जबान की हिफाजत करनी चाहिये. इस्के लिये जरूरी है की गुफ्तगू से पहले उस्का वजन कर लिया जाये, अगर उस्मे कोई मसलिहत है तो बात करे वरना बस खामोश रहे. (फत्हुल बारी)

*गुनाहो से बाज रहना

रावी हज़रत अबू मूसा रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया में और जो अल्लाह तआला ने मुझे देकर भेजा है उस्की मिसाल ऐसी है जैसे किसी आदमी ने अपनी कौम से कहा की मेने दुश्मन का लश्कर अपनी आंखो से देखा है और में तुम्हे खुले और स्पष्ट तौर पर डराने वाला हु. भागो और उस्से बचो. एक जमात ने उस्का कहा माना और

रात ही रात में इत्मीनान से निकल गया, उन्होने तो अपनी जान बचा ली, और कुछ लोगो ने उस्की बात ना मानी यहा तक की सुबह के वकत वह लश्कर आ पोहुचा, फिर उसने उन्हे तबाह कर डाला.
वजाहत- अल्लाह तआला का अजाब बिल्कुल तैयार है, सच्चे दिल से तौबा करके अपने आपको बचावो.

*अपने से कम की तरफ देखे और बडे की तरफ ना देखे
रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जब तुम्मे से किसी की नजर ऐसे आदमी पर पडे जो माल व खूबसूरती में तुम्से बढकर हो तो उसे उन लोगो को भी देखना चाहिये जो इन बातो में उस्से कम हो.
वजाहत- एक हदीस में है की जो आदमी दुन्यावी लिहाज से अपने से कमतर को देखकर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता है और दीनी लिहाज से अपने से बेहतर को देखकर उस्की तरह अमल में आगे बढने की कोशिश करता है तो अल्लाह तआला के यहा साबिर व शाकिर लिखा जाता है. (फत्हुल बारी)

*नेकी और बुराई का इरादा करना कैसा है?

रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने अपने परवरदिगार से नकल करते हुवे फरमाया अल्लाह तआला ने नेकिया और बुराईया सब लिख दी है. फिर इस्की तफसील यू बयां-की,

जिसने सिर्फ नेकी का इरादा किया उसपर अमल ना-कर सका तब भी अल्लाह तआला उस्के लिये पूरी नेकी लिख देते है, और जिसने नेकी का इरादा किया और उसपर अमल भी किया तो उस्के नामा ए आमाल में दस से लेकर सात-सौ तक बल्की इस्से भी कही जियादा नेकिया लिख देंगे, लेकिन जिसने बुराई का इरादा किया फिर वह बुराई ना-की तो उस्के लिये भी अल्लाह तआला एक पूरी नेकी लिख देते है, लेकिन जिसने इरादा करके बुराई कर डाली तो उस्के लिये अल्लाह तआला एक ही बुराई लिख देते है. अधिक मालूमात के लिये पढये सूरे बकरह/२, आयत/२६१ की तफसीर.

*दुनीया से अमानतदारी का उठ जाना

रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रदी:> मेने रसूलुल्लाहﷺ से सुना, आप फरमा रहे थे इन्सानो का हाल तो ऊंटो की तरह है की सौ ऊंटो में एक ऊंट भी तेज सवारी के काबिल नहीं मिलता.

वजाहत:- ऐसे लोग बहुत कम है जो ईमानदार और मामले को समझने वाले हो जो अपने दोस्तो के मुताल्लीक नरम-मिजाजी का मामला करने वाले हो. (फत्हुल बारी)

*दिखावा और शोहरत की बुराई

रावी हज़रत जुन्दुब रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जिसने शोहरत पाने के लिये नेक काम किया अल्लाह तआला (कयामत के दिन)

उस्की बुरी नीयत का हाल सब को सुना देंगे, जिसने दिखलावे के लिये काम किया अल्लाह तआला उस्का दिखलावा जाहिर कर देंगे. वजाहत- नेक आमाल को पोशीदा (गुप्त) रखना चाहिये लेकिन जिन्की लोग पैरवी करते है अगर वे अपने अमल जाहिर कर दे तो हर्ज़ नहीं, क्युकी उस्से लोगो की इस्लाह (सुधार) मकसद होती है. (फत्हुल बारी)